उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 926/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनाँक: 10.10.2024

दिनांक	:	10 अक्टूबर, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की सोलहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की सोलहवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 10 अक्टूबर, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर व मौसम वैज्ञानिक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक तथा व्हीट ब्रीडर; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में पशुपालन विभाग के वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

प्रथम सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (11 से 17 अक्टूबर, 2024)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार प्रदेश में इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में आसमान मुख्यतया साफ से आंशिक बदली रहने के बावजूद मौसम शुष्क रहने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के पश्चिमी मैदानी क्षेत्र तथा मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र में यह 32 से 35 डिग्री सेल्सियस; मध्य मैदानी क्षेत्र, उत्तरी–पूर्वी मैदानी क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र में यह 33 से 36 डिग्री सेल्सियस जबकि दक्षिणी–पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र, बुंदेलखण्ड क्षेत्र एवं विंध्य क्षेत्र में 34 से 36 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

इस दौरान प्रदेश का औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान भाभर तराई क्षेत्र में 18 से 22 डिग्री सेल्सियस; मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में 19 से 22 डिग्री सेल्सियस; दक्षिणी–पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र में 20 से 22 डिग्री सेल्सियस; मध्य मैदानी क्षेत्र में 22 से 24 डिग्री सेल्सियस; विंध्य क्षेत्र में 22 से 25 डिग्री सेल्सियस जबकि बुंदेलखण्ड क्षेत्र, उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र में यह 23 से 25 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 30 सितम्बर, 2024) के दौरान उत्तर प्रदेश में 746.2 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष कुल 744.3 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य के लगभग बराबर है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 799.2 मिमी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 7 प्रतिशत कम कुल 745.5 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 672 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत वर्षा के सापेक्ष कुल 742.8 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 11 प्रतिशत अधिक रही। मानसून ऋतु के दौरान इस वर्ष प्रदेश के बस्ती जनपद में सर्वाधिक 1276.4 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- रबी फसलों की बुवाई के लिये खेत की तैयारी हेतु भूमि एवं बीज जनित रोगों के नियंत्रण के लिये बायोपेस्टीसाइड (जैव कवकनाशी) ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 कि.ग्रा. प्रति हे. 60 से 75 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरांत बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला दें जिससे अनावृत कण्डुआ, करनाल बंट आदि रोगों के प्रबंधन में सहायता मिले।
- रबी फसलों की बुवाई से पूर्व यदि बीज शोधित नहीं है तो बीज अवश्य शोधित कर लें।
- वातावरण में तापक्रम एवं नमी की अधिकता रहने से फसलों में रोग एवं कीट प्रभावी होंगे अतः कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश–प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें।
- पर्यावरण हितैषी प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाय, कृषि रसायनों का प्रयोग वैज्ञानिक सलाह पर ही संस्तुति अनुरूप किया जाय।

धान की खेती

- आगामी सप्ताह में वर्षा की संभावना न होने के कारण धान में फूल खिलने, दुग्धावस्था व दाने भरने की अवस्था में पर्याप्त नमी बनाये रखें।
- जिन कृषकों ने बीज के लिये धान की फसल ली है उन्हें सलाह दी जाती है कि वह खेत से अवांछित पौधों को हटा (रोगिंग) दें।
- यदि फसल परिपक्वता अवस्था में हो तो धान के खेत में पानी का जमाव न होने दें।
- धान में मिथ्या कण्डुआ (फाल्स स्मट) रोग के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल 25 ई.सी. की 500 मि.ली. अथवा नाटीवो 75 डब्लू.जी. की 300 मि.ली. मात्रा को 500 ली. पानी के साथ बाली निकलते समय पहला एवं दूसरा छिड़काव 12 से 15 दिन के अंतराल पर करें।
- गंधी कीट 1–2 कीट प्रति पुंज तथा सैनिक कीट की 4–5 सूड़ी प्रति वर्ग मी. दिखाई देने पर मैलाथियान 5 प्रतिशत धूल 20–25 किग्रा. अथवा फेनबैलरेट 0.04 प्रतिशत धूल 20–25 किग्रा. का प्रति हे. की दर से सुबह के समय बुरकाव करें।
- तना बेधक कीट व भूरा फुदका के नियन्त्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 सी.जी. 20 किग्रा. अथवा कारटॉप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी 20 किग्रा. 3–5 सेमी. स्थिर पानी में बुरकाव करें अथवा क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ई. सी. की 1.5 लीटर मात्रा प्रति हे. 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की असिंचित दशा में बुआई का समय 25 अक्टूबर से 10 नवम्बर के मध्य है। अतः गेहूँ की संस्तुत किस्मों यथा के. 1317, के. 1616, डी.वी.डब्लू. 252, एच.आई. 1612, एच.डी. 3171, एच.डी. 3293, एच.डी. 3237, एच.डी. 3365, एच.यू.डब्लू.–669 एवं के–9351 आदि के बीज की व्यवस्था करें।
- कठिया गेहूँ की खेती के लिये संस्तुत किस्में जैसे आरनेज 9–30–1, मेघदूत, विजगा यलो जे.यू.–12, जी.डब्लू. 2, एच.डी. 4672, सुजाता, एच.आई. 8627 आदि के बीज की व्यवस्था करें।

जौ की खेती

- जौ की असिचिंत दशा में बुवाई का समय 20 अक्टूबर से 10 नवम्बर है। असिचिंत दशा हेतु जौ की संस्तुत किस्में यथा के–603, के–226 (लखन), के–125 (आजाद), के–1149 (गीतांजली), आर.एस.–6 की बुवाई हेतु बीज की व्यवस्था करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- राई/सरसों की सिंचित क्षेत्रों के लिये संस्तुत समय से बोई जाने वाली किस्में यथा पूसा–0031, आर.एच. –749, आर.एच.–1975, गिरिराज (डी.आर.एम.आर.–आई.जे.–31), आर.जी.एन.–73, सुरेखा, आजाद महक, सी.एस.–60, सी.एस.–58, कान्ती, माया, नरेन्द्र स्वर्णा–राई–8, नरेन्द्र राई (एन.डी.आर.–8501) तथा असिंचित किस्में यथा डी.एम.आर.–1165–40, आर.एच.–725 बुवाई करें।

रबी मक्का की खेती

- रबी मक्के की संकर किस्मों यथा एल.जी.–32.81 (युवराज गोल्ड), पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीडटेक–2324, शक्तिमान–1, बुलंद; संकुल किस्मों यथा शियाट्स मक्का–3, शरदमणि, शक्ति–1; लावा की किस्में पर्ल पॉपकार्न, अम्बर पॉपकार्न, स्वीट कार्न, प्रिया स्वीट एवं माधुरी स्वीटकार्न की बुवाई 15 अक्टूबर से करने हेतु बीज की व्यवस्था करें।

गन्ना की खेती

- गन्ना की शीघ्र उच्च शर्करायुक्त प्रजातियां को. लख.–94184, को. लख.–14201, को. लख.–16202, को. शा. 17231, को. 15023 तथा को. लख–14204, पंत–97222, सी.ओ.–0118, सी.ओ.–0523, को. लख. –09204 (मध्य देर से परिपक्वता) की किस्मों की बुवाई करें।
- जिन कृषकों का खेत खाली हो तथा उसमें पर्याप्त नमी भी हो, उसे शीघ्र तैयार कर शरदकालीन गन्ना की बुवाई करें। खेत की तैयारी करते समय उपलब्ध हो तो उसमें जैविक खाद, कम्पोस्ट, गोबर की खाद या प्रेसमेड खाद का प्रयोग अवश्य करें।
- गन्ना की उन्नत प्रजातियों को.शा.–97261, को.लख.–09204, को.शा.–8279, को.शा.–767 एवं को.–0504 आदि की बुवाई करें। संस्तुत प्रजातियों के स्वस्थ बीज की उपलब्धता के लिये निकट के शोध संस्थान, चीनी मिल या गन्ना विकास परिषद या गन्ना पर्यवेक्षक से संपर्क करें।

- गन्ने की दो पंक्तियों के मध्य उपलब्ध संसाधनों के अनुसार आलू (एक पंक्ति), लहसुन (4 पंक्ति), मटर फली (2 पंक्ति), लाही (2 पंक्ति), सौंफ, धनिया, मसूर, शरदकालीन सब्जियाँ अन्तः फसलों के रूप में लगायें।
- गन्ने के टुकड़ों को बावस्टिन से उपचारित करके ही बुवाई करें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए एट्राजीन 2 किग्रा./हे. की दर से बुवाई के तीन दिन के अन्दर स्प्रेयर (फ्लैटफैन नाजिल सहित) से छिड़काव करें।
- गन्ने की त्रिकोणी बंधाई करें।
- गन्ने की खड़ी फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. (6.25 ली./हे.) रसायन का 1500–1600 लीटर पानी में घोल बनाकर जड़ के पास छिड़काव करें।

चना की खेती

- चने की असिचिंत दशा की बुवाई अक्टूबर के द्वितीय या तृतीय सप्ताह तक कर ली जाय तथा असिंचित दशा हेतु संस्तुत किस्म यथा गुजरात चना–4 की बुवाई सुनिश्चित करें।

मटर की खेती

- मटर की किस्मों यथा आई.पी.एफ.डी.6–3, आई.पी.एफ.डी. 9–2, आई.पी.एफ.डी. 12–2, आई.पी.एफ.डी. 16–3 की बुवाई करें।

आलू की खेती

- बुवाई के 7–10 दिन पहले शीत भण्डार से बीज आलू को बाहर निकालें। शीत भण्डारण में भण्डारित बीज में यदि अंकुर निकल आये तो उनको छॉटकर अलग कर दें। यदि शीत गृह में भण्डारण करने से पूर्व आलू उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से आलू निकालकर छांटने के तुरन्त बाद आलू के कन्दों को बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सुखा लें।
- आलू की मुख्य फसल 15 अक्टूबर से लेने हेतु खेत की तैयारी तथा बीज की व्यवस्था करें। मुख्य फसल हेतु कुफरी बहार, कुफरी बादशाह, कुफरी आनन्द, कुफरी सतलज, कुफरी चिप्सोना–1, कुफरी चिप्सोना–3, कुफरी लालिमा, कुफरी सूर्या आदि किस्में उपयुक्त हैं।
- बीज आलू उत्पादन हेतु सम्पूर्ण कन्द की बुवाई सुनिश्चित करें।

सब्जियों की खेती

- रबी सब्जियों की बेहन हेतु फूलगोभी, पातगोभी, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई के लिए यह समय उपयुक्त है तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई मेढ़ों पर यथाथीघ्र करें। नर्सरी के लिये लो टनल का प्रयोग करें।
- वर्तमान मौसम की स्थिति में सब्जियों पर कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप जैविक कीट व रोगनाशियों का प्रयोग करें।
- लतावर्गीय सब्जियों को कीट एवं रोगों से बचाने की विशेष आवश्यकता है। फल मक्खी कीट की रोकथाम के लिये 10 मि.मी. मैलाथियान एवं 10 मि.ली. मिथाईल यूजीनाल को 05 ली. पानी में घोलकर 500 ग्रा. या शीरा को मिलाकर प्रति हे. 15–20 जगह चौड़े मुंह की शीशी या बॉटल में रखें।
- शाकभाजी फसलों में वातावरण में तापमान व आर्द्रता की स्थिति में विषाणुजनित रोगों का प्रकोप होने पर प्रभावित पौधों को खेत से निकालकर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें तथा संस्तुत अंतः प्रभावी कीटनाशकों को छिड़काव करें।

फलों की खेती

- केले में एक तलवार पुत्ती को छोड़ते हुए शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।
- केले में वर्तमान मौसम में बीटिल कीट को प्रकोप होता है जिसके नियंत्रण हेतु मोनोक्राटोफॉस (1.25 मि.ली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव करें अथवा कार्बोफ्यूरान 3 से 4 ग्राम प्रति पौधे की दर से गोफे में तथा मिट्टी में मिलायें।
- केले में पर्णचित्ती एवं एन्थेकनोज के नियंत्रण के लिये कॉपरआक्सी क्लोराईड (3 ग्रा./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- आम में रेड रस्ट एवं ऐन्थकनोज के नियंत्रण के लिये कॉपरआक्सी क्लोराईड (3 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

- आँवले में फल सड़न रोग की रोकथाम हेतु बोरेक्स (6–8 ग्राम/ली. पानी) का छिड़काव करें तथा उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का थालों में प्रयोग करें।
- नींबू में कैंकर रोग से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 600 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम में गुम्मा व्याधि का संक्रमण होने पर एन.ए.ए. 200 पी.पी.एम. (200 मि.ली./ली. अथवा प्लेनोफिक्स 4 मिली. /9 ली. पानी) का छिड़काव करें।
- टैन्ट कैटरपिलर (जाला कीट) का प्रकोप होने की दशा में कार्बेरिल 4 ग्राम अथवा क्वीनालफॉस 2 मिली प्रति ली. पानी की दर से छिड़काव करें।
- उल्टा सूखा रोग (डाई बैक) से ग्रसित टहनियों की कटाई–छंटाई करें। टहनियों को हरे हिस्से से 5–8 से.मी. नीचे से काटने के बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 3 ग्रा./ली. पानी की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें। इसके प्रयोग से फोमा ब्लाइट भी रोका जा सकता है तथा इसके लिए अलग से छिड़काव की आवश्यकता नहीं होगी।

पशुपालन

- खुरपका एवं मुंहपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का टीकाकरण पश्चिमी उ.प्र. के 15 जनपदों में 30 अक्टूबर तक तथा लम्पी त्वचा रोग का टीकाकरण अक्टूबर से प्रदेश के समस्त जनपदों में निःशुल्क चलाया जायेगा।
- ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें।
- पशुओं में बच्चा पैदा होते ही बच्चे की नाल को 1.5 से 2 इंच पर धागे से बांधकर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन का प्रयोग करें।
- पशु ब्यान के दो घंटे के भीतर बच्चों को खीस अवश्य पिलायें।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- रबी चारा हेतु पशुपालक स्थानीय चिकित्सालय से सम्पर्क कर बीज प्राप्त करें।

मत्स्य पालन

- कार्प मछलियों की 50 मिमी. अथवा अधिक आकार की 10000 स्वस्थ अंगुलिकायें प्रति हे. की दर से संचय की जा सकती है।
- छः प्रजातियों के मिश्रित पालन में कतला 10 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, मृगल 15 प्रतिशत, सिल्वर कार्प 20 प्रतिशत ग्रास कार्प 10 प्रतिशत, कामन कार्प 15 प्रतिशत का संचय अनुपात उचित होता है।
- तालाब में यदि 4 प्रजातियों का पालन किया जाता है तो कतला 30 प्रतिशत, रोहू 25 प्रतिशत, नैन 20 प्रतिशत व कॉमन कार्प 25 प्रतिशत का संचय अनुपात उचित होता है। तीन प्रजातियों के पालन में कतला 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत व नैन 30 प्रतिशत का संचय अनुपात होना चाहये।
- एक सप्ताह बाद जल हरा होना प्रारंभ हो जाता है जल का हल्का हरा होना मछली के आहार का सूचक है।
- यदि पानी का रंग गहरा नीला हो जाता है तो यह मछलियों के लिये हानिकारक है।
- तालाब में फाइटोप्लेटान, जूप्लेक्टान मछलियों के प्राकृतिक भोजन होते है जिनका उत्पादन कार्बनिक खाद व रासायनिक उर्वरक के प्रयोग फलस्वरूप होता है।
- पूरक आहार का प्रयोग तालाब में मछलियों के भार का 1 से 2 प्रतिशत प्रतिदिन के अनुसार करना चाहये
- तालाबों में बुझा चूना 250 कि.ग्रा./हे. एवं गोबर की खाद 1 टन/हे. डलवा दें।
- निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। अतः सभी मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज संचय करें और मत्स्य बीज का मॉग पत्र जनपद स्तर पर मत्स्य विभाग को कार्यालय में जमा कर दें।

रेशम पालन

- शहतूती सेक्टर में पतझड़ व्यवसायिक क्राप की कीट पालन का कार्य प्रगति पर है। अतः कीटपालकों को सुझाव दिया जाता है कि कीट मोल्ट से बाहर आने के बाद प्रथम फीडिंग के 30 मिनट पूर्व विजेता या आर.के.ओ. का छिड़काव करें, जिससे कीटों में आने वाली बीमारियों को रोका जा सकें।
- कीट पालन ट्रे में रेशम कीट का सही फैलाव करें तथा क्लीनिंग नेट का प्रयोग करते हुये रेशम कीटों का अन्य ट्रे में स्थानांतरण करते हुये साफ सफाई करें।

वानिकी

- ऊँचे जल स्तर वाले क्षेत्रों में युकेलिप्टिस लगायें। कृषि के साथ कम छाया वाले वृक्ष जैसे–पापुलर, युकेलिप्टस, सुबबूल लगायें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 24 अक्टूबर, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।

28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

11-10-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की सोलहवीं बैठक दिनांक 10 अक्टूबर, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ ।
5. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
6. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
7. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
8. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
9. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ
10. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ ।
11. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
12. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
13. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
14. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।